॥ सर्वभूतहिते रताः ॥

भारत साधु समाज

अखिल भारतीय महा अधिवेशन
के अवसर पर

शास्त्री नारायणस्वरूपदासजी
(प्रमुख स्वामीजी)

का

स्वागताध्यक्षीय अभिभाषण

स्वामिनारायण नगर, अहमदाबाद. ८ मार्च १९८१

भारत साधु समाज
२२, सरदारपटेल रोड, नई दिल्ली ११००२१

॥ सर्वभूतहिते रताः ॥

भगवान स्वामिनारायण द्विशताब्दी के पावन
अवसर पर आयोजित

भारत साधु समाज
अखिल भारतीय महा अधिवेशन

*

: स्वागताध्यक्ष :

पूज्य प्रमुख स्वामी नारायणस्वरूपदासजी का

स्वागताध्यक्षीय प्रवचन

पूज्यपाद जगद्गुरु शंकराचार्यजी एवं रामानन्दाचार्यजी सभापतिजी एवं भारतीय संस्कृति के संरक्षक साधुगण एवं सज्जनों,

स्वागतं वो महाभागाः । सदण्डवत् नमस्कार ।

भारत साधु समाज के इस अखिल भारतीय महा अधिवेशन में उपस्थित आप सभी पूजनीय महानुभावों का स्वागत करते हुए हमें अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है ।

आज अहमदाबाद का – संपूर्ण गुजरात का सौभाग्य है कि भारत के मूर्धन्य धर्माचार्य यहां पधारे हुए हैं । अनेक परेशानियों को सहन कर दूर-दूर के तीर्थों में जाकर सन्त-पुरुषों की पावनवाणी सुनने को मिलती है और दर्शनका लाभ होता है वे सभी तीर्थस्वरूप सन्तपुरुष हमारे घर पधारे हैं, घर बैठे ही हमें गंगास्नान का लाभ मिला है, अतः हृदय में आनन्द की सीमा नहीं है ।

आज गंगाघाट से और कावेरी घाट से, पुरी से और द्वारिका से, दिल्ली और मद्रास से, ऋषिकेश, हरिद्वार, चित्रकूट-अनेक स्थलों से महानुभाव साबरमती तट पर एकत्रित हुए हैं – एक पवित्र संगम हुआ है । अहमदाबाद शहर का पुण्य आज अनेक गुना बढा है, गुजरात धन्य हुआ है ।

गरवी गुजरातकी भूमि प्राचीनकाल से ही धर्मपरायण एवं सात्त्विक रही है। यहां भगवान के अवतार हुए हैं और महान सन्त तथा समाज नेता भी प्रगट हुए हैं। भगवान श्रीकृष्ण परमात्मा ने भी द्वारिका को अपनी लीला-भूमि बनायी थी उसी से द्वारिकाधीश के दर्शन बिना भारत-यात्रा अपूर्ण मानी जाती है। प्रभास पाटण भी श्रीकृष्ण की याद दिलाता है। इतिहास प्रसिद्ध सोमनाथ तो युग-युग के वन्दनीय देव है। परधर्मियों द्वारा अनेक आक्रमण हुए फिर भी सोमनाथ सोमनाथ ही है। पश्चिम भारत का ऐतिहासिक स्वयंभू महादेव! भक्त बोडाणा की भक्ति से प्रसन्न हो रणछोडराय जहां विराजमान हुए वह डाकोर का तीर्थ भी यहीं है। योगी, संन्यासी, अवधूत-तपस्वी -महात्मा-वैरागी सभी प्रकारके साधुओं से पुण्यधाम गिरनार के शिखर सदैव उच्च जीवन का संदेश देते हैं। आबू के तीर्थों में जगज्जननी अम्बाजी विराजमान हैं। कितने तीर्थों को याद करे और कितनों को भूले? समस्त गुजरात भी एक विशिष्ट तीर्थ ही हैं।

कपिलमुनि ने यहीं से सांख्यज्ञान का प्रवर्तन किया। यहीं से ही कवि दण्डी ने साहित्यधारा बहायी। नरसिंह महेता ने आत्मतत्त्व की जागृति के लिए ज्ञान गंगा बहायी, मीरांबाई ने गिरधर गोपाल के प्रति परम प्रेमरूपी भक्ति फैलाई और दयाराम ने कृष्णभक्ति विकसित की।

गुजरात तो सन्तों की भूमि है। प्रसिद्ध जैनाचार्य हेमचन्द्राचार्य, दयानन्द सरस्वती यहीं पैदा हुए थे, सोरठ के पवित्र चरितों एवं सज्जन पुरुषों की गाथा तो काफी लम्बी हो जायेगी। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी, सरदार वल्लभभाई आदि कई महापुरुषों की यह जन्मभूमि है। केवल पुरुषों में ही नहीं गुजरात ने नारियों के प्रेरक आदर्श भी प्रस्तुत किये हैं।

ऐसे परम पुनीत गुजरात के केन्द्र में औद्योगिक और शैक्षणिक भूमि-अहमदावाद में भारत साधु समाज का अधिवेशन आयोजित किया गया है, यह महत्त्वपूर्ण है।

फिर भी विशेष आनन्द की वात यह है कि गुजरात के महान ज्योतिर्धर भगवान स्वामिनारायण के द्विशताब्दी महोत्सव के उपलक्ष्य में यह अधिवेशन सम्पन्न हो रहा है यह सोने में सुहागा है।

इस पुनीत अवसर पर भारतीय संस्कृति का मूर्तिमन्त दर्शन हो रहा है। ऋषिमुनियों की साधना से, उनके तप, वैराग्य और ज्ञान से जो

अमूल्य पूंजी भारतीय प्रजा को मिली है, वह विश्व का प्राचीनतम एवं अमूल्य भंडार है। वेद–उपनिषद, गीता, रामायण महाभारत आदि शास्त्रों के विना विश्व की कल्पना करना असम्भव है। तपोवन में ऋषियों के ज्ञान से उगी–प्रफुल्लित हो सर्वत्र फैली भारतीय-संस्कृति की गौरवगाथा गाने में स्वयं चतुरानन भी समर्थ न हो तो दूसरों की क्या वात ?

हमारे महान आचार्य – शंकराचार्य, रामानुजाचार्य, मध्वाचार्य, निम्बार्काचार्य, वल्लभाचार्य, तथा चैतन्य महाप्रभु, नानक, कवीर, सूरदास, तुलसीदास, त्यागराज, ज्ञानेश्वर, तुकाराम, संत मत्स्येन्द्रनाथ, संत दादू, संत गरीवदास, रामकृष्ण परमहंस, विवेकानन्द आदि सन्तों ने ज्ञान, वैराग्य, धर्म और भक्ति का स्रोत वहा कर भारतीय संस्कृति को जीवन्त रखा। उन्होंने मानवजीवन का ध्येय–धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष, चार पुरुषार्थों का प्रवर्तन कर मानवता सुरक्षित रखी है। उनके अथक प्रयत्नों से हिमालय से कन्याकुमारी, और पुरी से द्वारिका तक का समस्त भारत देश एकता से वद्ध रहा, तथा सदाचार एवं पुण्य से संस्कारित है, यह हमारा अमूल्य उत्तराधिकार है, हमारा प्राण है, हृदय है। इसे जीवन्त एवं सुरक्षित रखना हमारा कर्तव्य है।

परन्तु दुःख एवं संकोच के साथ कहना पडता है कि आज के भौतिकवादी जीवन में भारतीय संस्कृति का ह्रास हो रहा है। हमारी सदाचार प्रणाली के विपरीत जीवन सर्वत्र फैला है। दुनियाने भले ही अणु शक्ति के संशोधन से लम्बी कूद लगाई है, मनुष्य भले ही चन्द्रमा पर घूम आया है – फिर भी मनुष्य अपना मूल ध्येय भूला है। विज्ञान ने शक्ति दी है परन्तु दिशाओं का ज्ञान तो हमारे ऋषियोंने ही दिया है। इस ज्ञान की अवहेलना होने से आज की दुःखात्मक परिस्थिति उत्पन्न हुई है।

आज उगते हुए फूलों समान बालकों के संस्कार लुप्त होते जा रहे हैं। विलासी जीवन के वातावरण में बालकों को उच्च जीवन की प्रेरणा कहाँ से मिले ? ऐसी ही स्थिति युवको की भी है – अश्लील चलचित्रों, नाटकों तथा संगीत का प्रभाव युवकों पर गहनता से पड़ चुका है। तम्बाकु, नशीले पदार्थ और शराब के व्यसन में मशगुल रहने वाले युवक कुटुम्ब से तो अलग होते ही हैं परन्तु कर्तव्यपथ से भी गिरते जा रहे हैं। कौटुम्बिक सम्बन्धो में भी मर्यादा, शील और स्नेह का अभाव है। वासनाएँ एवं वहम समाज के मूल बन बैठें हैं। आज खून, हिंसा, लूट–फाट, चोरी आदि तो दैनिक समस्याये

हो गई हैं, जीवनमें सुरक्षा नहीं है। मांसहार के नाम पर निर्दोष प्राणियों की हिंसा हो रही है। माता के समान गायों का वध हो रहा है जो निर्दयता की सीमा लाँघती है। पेट भरने के लिए निर्दोष प्राणियों के जीवन का नाश करना यह हमारी संस्कृति के प्रतिकूल है। आज घर-घर, गाँव-गाँव और शहर-शहर में ऐसा दौर चल रहा है जिससे प्रजा ने क्षणिक विषयानन्द में ही जीवन का ध्येय मान लिया है।

अतः दृढ़ता पूर्वक हमारा मन्तव्य है कि आज देश को ऐसे साधु समाज की विशेष आवश्यकता है। भारत की महान संस्कृति की रक्षा के लिए साधु समाज आगे आवे ऐसी प्रजा की मांग है।

पहले भी जब-जब समाज आपत्ति में था, संस्कृति भयभीत थी, धर्म गौण हो गया था तब सन्तों ने ही परिस्थिति सुधारी थी। इतिहास इस का साक्षी है, इतना ही नहीं अपितु भारत की तो यह प्रणाली है कि साधु-सन्तों के मार्गदर्शन पर राजा राज्य करते थे। छोटे ग्रामप्रतिनिधियों से लेकर बड़े-बड़े सम्राट भी साधु-सन्तों के कहने के अनुसार व्यवहार करते थे। इसी से आज जब सदाचार, संयम, सत्य, नीति, धर्म, अहिंसा, बन्धुत्व, ब्रह्मचर्य जैसे उदात्त जीवन-मूल्यों की भावना लुप्त होती जा रही है तब इन मूल्यों के समर्थ संरक्षक साधु-सन्तों पर एक विशेष जबाबदारी आ गई है।

कहते हैं कि प्राचीन समय में भी जब आसुरी वृत्ति बढ़ गई थी। भोग-विलास एंव दुराचार ने समाज को जकड़ लिया था तब देवताओं ने एकत्रित होकर आसुरी शक्ति को काबू में लिया था और देश में पुण्य एवं शान्ति का विशिष्ट वातावरण निर्मित किया था। इसी से आज की परिस्थिति का विचार करते हुए लगता है कि राष्ट्र के उत्थान के लिए, समाज को ऊर्ध्व ले जाने के लिए, विश्व कल्याण के लिए यदि कोई कार्य कर सकता है तो वह है साधु समाज, साधु शक्ति।

आनन्द की बात यह है कि इस कार्य को करने के लिए ही आज से पच्चीस वर्ष पहले भारत साधु समाज की स्थापना हुई। इस समाज के आदि प्रणेता महात्माओं के उपकार को भारतीय इतिहास भूल नहीं सकता है। किसी भी प्रकार के भेदभाव विना प्रत्येक मठ, परम्परा, सम्प्रदाय, धर्म और आश्रम के साधु-सन्त इसमें सहृदयता से कार्य करते हैं यह इस समाज की

विशिष्ट सिद्धि है। एक ही मञ्च पर भक्तिमार्गीय और ज्ञानमार्गीय, द्वैतवादी और अद्वैतवादी, परम्परावादी और प्रगतिवादी एकत्रित होकर समाज के उत्थान के लिए विचार करते हैं ये भारतीय संस्कृति के संस्कार हैं, क्यों कि हमारी संस्कृति की विशेषता है बहुलता में एकता।

आज देश को ऐसे साधु समाज संगठन की विशेष आवश्यकता है जो भारतीय संस्कृति एवं धर्म की रक्षा के लिए लोक शक्ति का संगठन कर जनता को मार्गदर्शन दे यह भारतीय जनता की साधु वर्ग से अपेक्षा है।

हमारा मानना है की राष्ट्र की भौतिक सिद्धियों एवं प्रगति की योजनाओं की सफलता के लिए भी मनुष्य की नैतिक एवं आध्यात्मिक विकास आवश्यक है। इसी लिए धर्म और संस्कृति के रक्षण के लिए, राष्ट्र के उत्थान के लिए, लोगों के चरित्र निर्माण के लिए, नैतिक मूल्यों की स्थापना के लिए और धार्मिक स्थानों एवं धर्म के ज्योतिर्धरों साधुओं की मर्यादा-परम्परा की रक्षा के लिए भारत साधु समाज बराबर प्रयत्नशील रहता है यह एक आशास्पद बात है, गहन अन्धकार में प्रातः के सूर्य प्रकाश समान है। यह प्रकाश पूर्णतः प्रसरित हों ऐसी हमारी भावना है।

आप सब को यह विदित ही है कि आज से दो सौ वर्ष पहले जब भारतीय संस्कृति एवं धर्म के आदेशोंमें ह्रास होने लगा तो उसे पुनः प्रज्वलित करने वाले युग पुरुष थे भगवान स्वामिनारायण।

उत्तर भारत में अयोध्या के पास छपैया गाँव में सं. १८३७ के चैत्र शुक्ल नवमी-रामनवमी के शुभ दिन इनका प्रागट्य हुआ। बचपन में ही शास्त्राभ्यास में पारंगत हो ११ वर्ष की अल्पायु में गृहत्याग कर लगातार सात वर्ष तक संपूर्ण भारत की पैदल यात्रा की। हिमालय में उन्हों ने कठिन तप किया। बंगालमें वहम और तंत्र-मंत्र में लीन प्रजा को निर्भय बनाया। दक्षिण में भक्ति परम्परा का दर्शन कर पश्चिम में गुजरातमें वे पधारे - गुजरात उनकी कार्यभूमि बनी।

उन्नीस वर्षकी अल्प आयुमें इस धर्माचार्य ने एक ही रात में अष्टांग ब्रह्मचर्य व्रतधारी ५०० परमहंस बनाये। पढे-लिखे सुखी-समृद्ध ५०० युवक एक महापुरुष के आदेश पर गृह-कुटुम्ब का त्याग कर धर्म की रक्षा के लिए प्राण न्योछावर करे यह विश्व के इतिहास की विशिष्ट घटना है। इन

पांचसौ साधु सन्तों ने गुजरात में लगातार विचरण कर गुजरात की काया पलट की जिसका प्रमाण इतिहास है ।

स्वामिनारायण एवं उनके सन्तों ने गाँव-गाँव घूम कर लोगों को भोग-विलास, व्यसन और वहमों से मुक्त किये जो दुराचारी थे, पापी थे, आसुरी-प्रवृत्तिग्रस्त थे उनको उन्हों ने प्रेम और करुणा से वश कर सदाचारी बनाये हिंसक लूटेरों को भक्ति में परिवर्तित करने वाले स्वामिनारायण के लिए कहावत भी प्रचलित है कि – "उन्होंने गधे को गाय बनाया" ।

उन्होंने साधु समाज की प्रतिष्ठा बढाई । व्यसन-मुक्त, स्त्री एवं धन के त्यागी, समाज का सर्वांगी उत्थान करने में तत्पर, आदर्श साधुओं की परम्परा उन्होंने स्थापित की । उन्होंने अपने साधु समाज के लिए निष्काम, निर्लोभ, निःस्वाद, निःस्नेह और निर्मान ये पांच व्रतों को अनिवार्य बनाया । इसी से धर्म के नाम पर साधु वेष में चलता ढोंग-ढकोसला वन्द हुआ । स्वामिनारायण ने शास्त्र द्वारा प्रमाणित सच्चे-सद्गुणी सदाचारी साधु-सन्तों का समागम करने का विवेक सिखाया है ।

स्वामिनारायण ने केवल धर्म या आध्यात्म मार्ग के ही नेता नहीं बन कर अनेक सामाजिक कार्यों को भी सम्पन्न किया वे श्रेय एवं प्रेय दोनों के पुरस्कर्ता थे । उन्होंने दुष्काल में सहायता शिविर निर्मित किये, बावली, तालाब, कुएं खुदवाये, बाल-विवाह, सतीप्रथा, दहेजप्रथा जैसी कुप्रथाओं को वन्द करवाया । यज्ञों मे होनेवाली पशु-हिंसा को रोक विश्वशान्ति के लिए अहिंसक यज्ञों की प्रणाली आरंभ की । उन्होंने अपने विद्वान शिष्यों से ब्रह्मसूत्र, उपनिषद, गीता आदि पर भाष्य लिखवाये और ब्रह्मरूप हो, परब्रह्म की उपासना करने का अपना मत स्थापित किया । जीव, ईश्वर, माया, ब्रह्म और परब्रह्म ये अनादि पांच तत्त्वों को स्वीकार कर साकार परमात्मा की भक्ति उन्होंने इष्ट मानी ।

उन्होंने अनेक मठ एवं मंदिर वनाये । उन्होंने समझाया कि मन्दिर केवल भव्य एवं मनोहर शिल्प-स्थापत्य ही नहीं परन्तु पुण्यमय संस्कार-केन्द्र है । वहां जो भी जाय उसके अन्तःकरण में शान्ति मिलनी चाहिए, संसार की अग्नि प्रशांत होनी चाहिए और हृदय भक्तिमग्न होना चाहिए । इसी से उन्हों ने मठ-मन्दिरों में सुन्दर मूर्तियां स्थापित करने के साथ-साथ सन्तों द्वारा शास्त्र की अखण्ड कथा-वार्ता चालू रखने की प्रणाली स्थापित की ।

वे महान समन्वयकारी पुरुप थे। उन्होंने राह चलते हुए किसी भी मन्दिर का आदर के साथ दर्शन करने की महान भावना अपने शिष्यों में सींची है। उन्हों ने पंचायतन देव को भी पूजनीय स्थान अर्पित कर अवतारों की आराधना करना सिखाया है। उन्हों ने कहा तुम किसी भी भगवान को मानो परन्तु सदाचारी एवं संयमी जीवन जीकर परोपकार के लिए तत्पर हो मुक्ति के लिए पुरुषार्थ करो।

स्वामिनारायण ने किसी एक अंग को प्रधानता नहीं दी, उन्हों ने धर्म पालन पर विशेष जोर दिया तो उतनी ही भक्ति की महिमा भी गायी। ज्ञान विना भक्ति को उन्हों ने अल्पकालिक माना, वैराग्य को उन्हों ने महत्वपूर्ण स्थान दिया। उन्होंने कहा कि धर्म, ज्ञान, वैराग्य, भक्ति आदि गुणों से युक्त साधुओं द्वारा भगवान कार्य करते हैं। इसी कारण उन की सन्त परम्परा में स्वामिनारायण के लोकोपकारक कार्य होते रहे हैं।

आज भगवान स्वामिनारायण द्विशताब्दी महोत्सव देश-परदेशमें शानदार रीत से आयोजित किया गया हैं। बोचासणवासी श्री अक्षरपुरुपोत्तम संस्था ने द्विशताब्दी के उपलक्ष में अनेक कार्य किये। शिक्षण, संगीत, धर्म, संस्कृति, आदिवासी उत्कर्ष, चिकित्सा, दर्शन, साहित्य के क्षेत्र में कार्य हुए और अव उसका मुख्य महोत्सव अप्रैल में इसी स्थान पर भव्यता से मनाया जायेगा।

इस मुख्य महोत्सव के ३७ दिनों के भव्य कार्यक्रम का शुभारम्भ भारत साधु समाज के महा अधिवेशन से हो रहा है यह वडा आनन्द की वात है। आदर्श साधु परम्परा के महान प्रणेता 'सर्वभूतहिते रताः' भगवान स्वामिनारायण के सर्वजीवहितावह के कार्य को यह एक विशिष्ट श्रद्धाञ्जलि होगी।

हमारा विश्वास है कि यह अधिवेशन पूर्णतः सफल होगा। क्यों कि आप जैसे महापुरुपों का इसमें पूर्ण योगदान है। विषय समिति एवं केन्द्रीय महासमिति ने जिन कार्यक्रमों का आयोजन किया है, जो सम्मेलन आयोजित किये हैं वे सभी अच्छी तरह सम्पन्न होंगे, क्यों कि इस के पीछे मात्र भारतीय धर्म और संस्कृति के रक्षण एवं प्रसार की भावना है। स्वागत समिति के हरेक सदस्य और अन्य कार्यकर्ताओं ने इस अधिवेशन के लिए विविध-सेवा व्यवस्था आदि कार्य किया है उन सब को भी धन्यवाद है। इस

प्रकार के सर्वजन उपयोगी कार्य की, तीर्थस्वरूप महापुरुषों की सेवा परिचर्या करने का दुर्लभ अवसर हमें मिला इस उपलक्ष्य में हम केन्द्रीय कार्यालय के तथा महामंत्री स्वामी हरिनारायणानन्दजी के कृतज्ञ है।

भारत साधु समाज देश के सभी साधु संप्रदायों की एक मात्र प्रतिनिधित्व करने वाली संस्था के रूप में देश-विदेश में भारतीय संस्कृति के आदर्शो की रक्षा में तल्लीन है। इससे हम सभी को प्रेरणा मिलती है। आज आवश्यकता इस बात की है कि भारत का प्रत्येक परिवार-मुक्त सन्त महन्त एक जुट हो कर संगठन को शक्तिशाली बनाये, जो सामाजिक जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में तथा साधु मर्यादा के विपरीत आचरण करनेवाले साधुओं पर भी सामाजिक अंकुश यथेष्ट रूप से लगा सके तथा राष्ट्रीय जीवनमें सदाचार एवं राष्ट्रीय निष्ठा की भावना को जागरूक बना सके।

अन्त में पुनः स्वागत समिति की और से सम्पूर्ण भारत से पधारे हुए सभी सन्त महन्त एवं विद्वान महात्माओं का मैं हृदय से स्वागत करता हूँ। स्वागत समिति की ओर से आप लोगों की सेवा-परिचर्या, व्यवस्था मर्यादा में जो कुछ भूल हुई हो, या त्रुटि रह गई हो तो उन सबके लिए मैं क्षमाप्रार्थी हूँ। आप सभी उदारता से क्षमा करोगें ऐसी मुझे आशा है।

आज के युग की मांग के अनुसार धर्म और संस्कृति के रक्षण एवं प्रसार के लिए साधु जन संगठित हो समाज उद्धार का कार्य करें इसी लिए आइये हम सब एकत्रित हो आगे बढें......

ॐ सहनाववतु सहनौ भुनक्तु सह वीर्यं करवावहै।
तेजस्विनावधीतमस्तु मा विद्विषा वहै।
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।

स्वामिनारायण नगर
आश्रम रोड, अहमदाबाद
८ मार्च, १९८१

- स्वामी नारायणस्वरूपदास
(प्रमुख स्वामी),